International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 1008-1010

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 1008-1010
www.allresearchjournal.com
Received: 01-09-2015
Accepted: 02-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

कामायनी में प्रत्यभिज्ञ–दर्शन

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भारत अपने दर्शन के कारण विश्व में प्रसिद्ध है। समग्र विश्व भारत को विश्व गुरु मानता है। दर्शन शब्द संस्कृत् की दृश् धातु से व्युत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है– देखना। लक्षणा शक्ति के द्वारा इसका अर्थ होगा– सत्य का साक्षात्कार करना। कामायनी प्रसाद की अनूठी रचना है। इसमें अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त शैव दर्शन का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में सविस्तार व्याख्यान किया गया है। वस्तुतः कामायनी एक ऐतिहासिक महाकाव्य है,परन्तु इसमें इतिहास के साथसाथ रूपक को भी प्रयुक्त किया गया है। बाह्यघटनाओं के मूल में कवि ने कुछ ऐसे दार्शनिक सिद्धान्तों की चर्चा की है जिनके आधार पर मन–मनु, हृदय–श्रद्धा,बुद्धि–इडा,का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। कामायनी में कवि ने शैवागमों के प्रत्याभिज्ञ दर्शन को आधार बनाकर इस महाकाव्य की रचना की है। कामायनी के दर्शन को जानने से पहले प्रत्यभिज्ञ दर्शन को जानना आवश्यक है।

1. प्रत्यभिज्ञ दर्शन– अर्थ एवं स्वरूप

शैव दर्शन मूलतः प्रत्यभिज्ञ दर्शन का उत्स माना जाता है। स्पष्ट ही है कि इस दर्शन का सीधा सम्बन्ध शिव से जुडा है। शिव ही चित्त है तथा सभी चित्तमय पदार्थ उसी से उत्पन्न होकर पुनः उसी में लीन हो जाते हैं।यह सृष्टि उसी का उन्मीलन है–

उन्मीलनम् अवस्थितस्यैतत् प्रकटीकरणम्

प्रत्यभिज्ञ दर्शन के अतिरिक्त त्रिक्दर्शन् है,षड्दर्शन और महेश्वरी दर्शन की भी चर्चा की जाती है। ये सभी अद्वैतवाद से सम्बन्धित है। प्रत्यभिज्ञ दर्शन के प्रतिष्ठापक आचार्य अभिनवगुप्त माने जाते हैं।1 आगम शास्त्र में अद्वैत का अर्थ है– दो अर्थात् आत्मा एवं परमात्मा का नित्य सामरस्य होना। अभिनवगुप्त के अनुसार माया परमात्मा की शक्ति है तथा उसके पांच कुंचक हैं–कला,विद्या
राग ,कालऔर नियति। इन पांच तत्वों के भीतर प्रवेश करने से इनके स्वरूप का ज्ञान हो जाता है और मनुष्य को माया से मुक्ति मिल जाती है। शैव दर्शन के अनुसार माया ही काम कला है। इसमें आगव,कर्म,और मायीय तीन मूल हैं। ये तीन ही बंधन कहलाते हैं। इन बंधनों या पाशों में आबद्ध जीव पशु है और ईश्वर पशुपति है2 ।प्रत्यभिज्ञ दर्शन के अनुसार इन कुंचकों आदि से आबद्ध जीव पुरुष कहलाताहै। शक्ति,आणव तथा शांभवोपाय के द्वारा जीव बन्धनों को काट सकता है,लेकिन इन तीनों उपायों में शांभवोपाय ही सर्वश्रेष्ठ है।
प्रत्यभिज्ञ दर्शन के अनुसार जब जीव अर्थात् पशु समरसता को ग्रहण कर लेता है तब वह कुंचकों से मुक्त होकर पशुपति अर्थात् ईश्वर से जुड जाता है। प्रत्यभिज्ञ दर्शन में समरसता के सिद्धान्त को विशेष महत्व प्राप्त है। दूसरे शब्दों में इसी को मुक्ति कह सकते हैं। प्रसाद ने कामायनी में प्रत्यभिज्ञा दर्शन को ही आधार बनाया है।
प्रसाद कवि और दार्शनिक दोनों थे। प्रायः दार्शनिकता में बुद्धि तत्व प्रधान होता है जबकि काव्य में हृदय। दानों की क्रियाप्रणाली भी अलग अलग होती है। दार्शनिक अपनी बात तर्क पूर्ण ढंग से शास्त्रीय शैली में कहता है जबकि कवि का विवेचन काव्य–शैली में होता हैं कामायनी में हमें प्रसाद जी का दार्शनिक रूप देखने को मिलता हे। प्रसाद कामायनी में व्रह्म को ही आनन्द मानते हैं।

कर रही लीलामय आनन्द,
महा चिति सजग हुई सी व्यक्त,
विश्व का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते अनुरक्त।

वस्तुतः कामायनी का मूल प्रतिपाद्य ही आनन्द है,परन्तु कामायनी में प्रतिपादित आनन्द वेदान्त में प्रतिपादित आनन्द की तरह का आनन्द नहीं है अपितु कामायनी का आनन्द शैवदर्शन का आनन्द है। डॉ विजयेन्द्र स्नातक के अनुसार–मनु अर्थत् मनन शक्ति के साथ श्रद्धा अर्थात् हृदय की भावात्मक सत्ता या विश्व समन्वित रागात्मिका–वृत्ति तथा इडा अर्थत् व्यावसायात्मिका बुद्धि के संघर्ष और समन्वय का विवेचन ही कामायनी का दार्शनिक आधार है। वस्तुतः प्रसाद जी ने वर्तमान युग की विभीषिकाओं के पीछे बौद्धिकता, आसुरीवृत्तियों और भौतिकता को ही मूल कारण माना। 3

कामायनी में प्रसाद ने आत्मा,जीव,जगत, नियति आदि के बारे में जो भी चिन्तन अभिव्यक्त किया है उसका आधार प्रत्यभिज्ञा दर्शन ही है। कामायनी में प्रत्यभिज्ञा दर्शन का प्रभाव किस सीमा तक है इसका मूल्यांकन निम्नलिखित अनुषंगों में किया गया है।

2. कामायनी में आत्मा का स्वरूप और प्रत्यभिज्ञा दर्शन–

प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार शिव ही लीलामय कर्मों का सम्पादन करता है। सृष्टि,स्थिति,संहार, अनुग्रह तथा निराधार द्वारा सृष्टि का विकास प्रत्यभिज्ञा दर्शन में प्रतिपादित है। कामायनी में प्रसाद जी ने चिति तथा महाचिति का जो उल्लेख किया है,वह प्रत्यभिज्ञा दर्शन से मेल खाता है। श्रद्धा मनु को सृष्टि का रहस्य समझाती हुई कहती भी है–

कर रही लीलामय आनन्द
महाचिति सजग हुई सी व्यक्त,
विश्वा का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते अनुरक्त।

प्रसाद ने कामायनी में अनेक स्थलों पर महाचिति अर्थात् शिव के कार्यों के बारे में स्पष्ट वर्णन किया है–

चितिमय चिता धधकती अविरल
महाकाल का विषय नृत्य था,
विश्व रंध्र ज्वाला से भर कर
करता अपना विषम कृत्य था।

इस प्रकार कामायनी में वर्णित आत्मा सम्बन्धित विचार प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार ही व्यक्त किए गए हैं।

3. जीव सम्बन्धी वर्णन और प्रत्यभिज्ञ दर्शन–

प्रत्यभिज्ञ दर्शन के अनुसार जीव ही पुरुष है। कामायनी में मनु भी दार्शनिक दृष्टि से जीव ही है। कामायनी के चिन्ता सर्ग में स्पष्ट रूप से मनु को पुरुष कहा गया है।

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

प्रत्यभिज्ञ दर्शन के अनुसार ही मनु का आरम्भिक जीवन निराशा,जडता,अहंभाव, भेदबुद्धि,अकर्मण्यता आदि के कारण बुरी तरह अस्तव्यस्त है। मनु किंकर्तव्यविमूढ से बन गए हैं। दार्शनिक रूप से यही षट् कुंचक हैं जिनका वर्णन प्रत्यभिज्ञा दर्शन में है। ऐसी परिस्थिति में मनु स्वयं को एक ऐसा हिमखण्ड कहता है जो पिघलकर पर्वत का झरना नहीं बन पाता –

शैल निर्झर न ब्ना हत भाग्य,
गल नहीं सका जो कि हिमखण्ड
दौड कर मिला न जल निधि अंक
आह, वैसा ही हूं पाषण्ड।

प्रसाद ने मनु के समग्र जीवन को उद्घाटित किया है। मनु की विविध अवस्थाओं का चित्रण भी प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार ही किया हैं।कामायनी में चिन्ता सर्ग से कर्म सर्ग तक मनु की जागृत अवस्था देखी जा सकती हैं। इस अवस्था में दृश्यमान् जगत को ही महत्व देता है तथा इस प्रकार अपने जीवन में बाह्य इन्द्रियों से उत्पन्न साधारण ज्ञान को ही समझाता है। मनु जबजब इन्द्रिय सुख की बात करता है,तबतब जीवन की यही स्थिति पाठक के समक्ष आती है। ईर्ष्या वश मनु श्रद्धा को त्याग कर आगे निकल जाता है। सुषुप्त अवस्था में जीव मोह–माया के कारण दुखी रहता है। ऐसी ही स्थिति अन्य सर्गों में भी मनु की देखी जा सकती है।

शापित सा मैं जीवन का यह
ले कंकाल भटकता हूं
उसी खोखलेपन में जैसे
कुछ खोजता भटकता हूं।

तुरीय अवस्था का भी कामायनी में उल्लेख है जब श्रद्धा मनु को शान्ति के लिए प्रार्थना करती है। रहस्य सर्ग में मनु तुरीय अवस्था में पहुंच जाता है तथा उसे उस परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है4 , जिसके लिए वह भटक रहा थां मनु को अब सभी पहचाने हुए लगने लगते हैं–

प्रतिफलित हुई सब आंखें
उस प्रेम ज्योति विमला से,
सबपहचाने से लगते,
अपनी ही एक कला से ।

कामायनी में उन सभी कोषों का भी उल्लेख है जो प्रत्यभिज्ञा दर्शन में वर्णित हैं। कामायनी में मनु अर्थात् मन मनुमयकोष,प्राणमयकोष,तथा अन्नमय कोष से ग्रस्त है। जब वह अपने आप को इन से अलग कर लेता है तो वह भगवान शंकर के दर्शन करके विज्ञानमय कोष में प्रवेश कर जाता है।5 फलस्वरूप मनु को अखण्ड आनन्द की प्राप्ति हो जाती है।

4. जगत सम्बन्धी विचार–

प्रत्यभिज्ञ दर्शन में वर्णित है कि यह सृष्टि महाचिति के समान मंगलमय है। प्रसाद के अनुसार यह सृष्टि उसी शिव की ही इच्छा का परिणाम है। कवि ने जड और चेतन संसार को मूलतः समरस के रूप में चित्रित किया है। कवि का विचार है कि सुख–दुख, विषमताएं ,ज्वालाएं आदि सभी कुछ ईश्वर का रहस्यमयी वरदान हैं। प्रसाद ने संसार का वर्णन सैद्धान्तिक दृष्टि से किया है,परन्तु कामायनी के आरम्भ में प्रसाद ने जगत को मिथ्या और दुखों का घर कहा है।6 प्रसाद मृत्यु को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

महानृत्य का विषय यही,
अखिल स्पन्दनों की तू माप
तेरी ही विभूति बनती है
सृष्टि सदा होकर अभिशाप।

5. प्रकृति और नियति का दृष्टिकोण–

प्रसाद ने प्रकृति और नियति के विषय में जो विचार कामायनी में व्यक्त किए हैं, वे प्रत्यभिज्ञ दर्शन से पूरी तरह मेल खाते हैं।प्रसाद स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति नित्य नूतन है और इसी नूतनता में ही इसी की आनन्दात्मक नूतनता विद्यमान है। प्रकृति शिव अर्थात् ईश्वर के साथ समरसता की स्थिति में ही रहती है। यह प्रकृति निरन्तर परिवर्तनशील भी है।प्रसाद के उद्गार देखिए–

चिर मिलिन प्रकृति से पुलकित
यह चेतन पुरुष पुरातन

निज शक्ति तरंगाचित था
आनन्द–अबु–निधि शोभन।

प्रत्यभिज्ञ दर्शन में नियति को शिव की शक्ति माना गया है। यह नियति ही ईश्वर की नियामिका शक्ति है।कामायनी में प्रसाद ने नियति के इस रूप का वर्णन किया है। चिंता सर्ग में देवताओं के विध्वंस के बाद नियति ही मनु को मार्ग का संकेत करती है। आशा सर्ग में भी प्रसाद नियति को शासिका के रूप में चित्रित करते हैं। रहस्य सर्ग में नियति कर्म चक्र चलाती है।नियतिके शासन से जीव तभी मुक्त होता है जब जीव शिवत्व को प्राप्त कर लेता है। उदाहरण देखिए–

लगते प्रबल थपेडे,धुंधले,
तट का था कुछ पता नहीं
कातरता से भरी निराशा
देख नियति पथ बनी वही।

6. समरसता सम्बन्धी विचार–

समरसता के विषय में दर्शन में कहा गया है कि शिव और शक्ति में अद्वैत होने पर ही समरसता आ सकती है। समरसता ही व्यक्ति को आनन्द प्रदान करती है। डॉ विजयेन्द्र स्नातक ने ठीक ही लिखा है–समरसता शब्द और समरसता सिद्धान्त को प्रसाद जी ने शैव दर्शन से ग्रहण किया है। शिवतत्व और शक्ति तत्व की समरसता शैव दर्शन की आधार भूत मान्यताओं में है और इसका प्रतिपादन स्थान–स्थान पर किया गया है। कामायनी में अनेक स्थानों पर समरसता का वर्णन किया गया है। श्रद्धासर्ग में श्रद्धा समरसता को प्राप्त करने की बात कही गई है।समरसता केवल शिव और शक्ति में ही नहीं अपितु नर और नारी में भी आन्द प्राप्ति के लिए समरसता आवश्यक है।7

नित्य समरसता का अधिकार
उमडता कारण जलधि समान
व्यथा में नीली लहरों बीच
बिखरते सुख मणिगण द्युतिमान।

कामायनी के रहस्य सर्ग में समरसता की विस्तृत चर्चा है। प्रसाद के अनुसार इच्छा,ज्ञान,और और कर्म मानव–मन की शाश्वत् प्रवृत्तियां हैं। ये तीनों अलग अलग होने पर मानव जीवन में विषमता अशांति को स्थान देतीं हैं और समरसता होने पर आनन्द का संचार करतीं हैं।8

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की।

7. कामायनी में आनन्द–वाद–

शैवदर्शन के अनुसार आनन्दवाद निर्गण–निराकार पृथ्वी पर आधारित है। शैवागमों के अनुसार यह आनन्द बाह्य नहीं अपितु आत्मानन्द होता है और यह शाश्वत् अनुभूतियों का ही परिणाम होता है।कामायनी में प्रतिपादित आनन्दवाद स्वामी वल्लभाचार्य के काम या आनन्द के ढंग का न होकर तान्त्रिकों और योगियों की अन्तर्भूमि पद्धति पर आधारित है। प्रसाद जी ने शैवागमों की प्रत्यभिज्ञा प्रणाली को आधार बनाकर ही आनन्दवाद की व्याख्या की है,परन्तु कुछ संदर्भों में उन्हें वेदान्त और बौद्धदर्शन से भी प्रभावित माना जा सकता है।प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार शिव को ही आनन्द का मूल माना गया है।9 प्रसाद का महाचेति का वर्णन देखिए–

चिति का स्वरूप यह नित्य जगत्
वह रूप बदलता है शत्–शत्
कर बिरह–मिलन में नित्य निरत,
उल्लासपूर्ण आनन्द सतत्।

कामायनी के रहस्य सर्ग में पहुंचकर कवि ने इच्छा, क्रिया और ज्ञान के समन्वय पर बल दिया है,और इसी से अखण्ड आनन्द की सृष्टि स्वीकार की है। इस समन्वय के उपरान्त सभी प्रकार के द्वैत समाप्त होकर आनन्द की प्राप्ति हाकती है।

प्रसाद का जीवन–दर्शन पूर्णतया शैवागमों के प्रत्यभिज्ञा दर्शन से प्रभावित है।इसके अतिरिक्त कुछ स्थलों पर बौद्धों के दुखवाद और क्षणिकवाद की व्याख्या भी मिलती है। इसमें संदेह नहीं कि उनपर डार्विन के विकासवाद का भी प्रभाव दिखाई देता है चाहे यह प्रभाव आकस्मिक ही क्यों न हो। कामायनी में बौद्धों के दुखवाद और क्षणिकवाद की पर्याप्त अभिव्यक्ति चिन्ता सर्ग में स्पष्ट देखी जा सकती है।

जीवन तेरा क्षुद्र अंश है,
व्यक्त नील घन–माला में,
सौदामिनी सन्धि–सा सुन्दर
क्षण भर रहा उजाला में।

इस तरह कामायनी में शैव दर्शन के प्रत्यभिज्ञा दर्शन का प्रभाव सर्वाधिक दिखाई देता है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि प्रसाद स्वयं भी शैव दर्शन से प्रभावित रहे हैं तथा उनका आराध्य एवं इष्ट भी शिव को ही माना जाता है।

8. सन्दर्भ सूचि–

1. जयदेव सिंह प्रत्यभिज्ञान हृदयम् पृ74
2. गजानन मुक्ति बोध कामायनी एक पुनर्विचार पृ134
3. डॉ उदय भानु सिंह कामायनी लोचन पृ79
4. द्वारिका प्रसाद सक्सेना कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन पृ169
5. मदन लाल कामायनी और उर्वशी में प्रतीक योजना पृ183
6. जयशंकर प्रसाद कामायनी पृ67
7. उत्पल देव प्रत्यभिज्ञान कारिका पृ04
8. जयदेव सिंह प्रत्यभिज्ञान हृदयम् पृ244
9. जयशंकर प्रसाद कामायनी पृ143